हिन्दी साहित्य के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका

दिलीप सिंह राजपूत

शोधार्थी पीएचडी, हिन्दी विभाग, कला एवं मानविकी अध्ययनशाला, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

"एक सरल वाक्य बचाना
मेरा उद्देश्य है
मसलन यह कि हम इंसान हैं
मैं चाहता हूँ
इस वाक्य की सच्चाई बनी रहे
सड़क पर जो नारा सुनाई दे रहा है,
वह बचा रहे अपने अर्थ के साथ।"

–मंगलेश डबराल

सारांश (Abstract) : सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी साहित्य में 'सूचना प्रौद्योगिकी' का अर्थ है– तकनीकी शब्दावली से युक्त ऐसी अवधारणा, जो सूचनाओं के समूह का नित नवीन तकनीक के माध्यम से विकास को प्रदर्शित करती है। इन सूचनाओं के समूह में आंकड़ों को प्राप्त करना, उसका संसाधन, संग्रहण, आदान–प्रदान करना, परिवर्तन, प्रदर्शित करना आदि महत्वपूर्ण कार्य आते हैं। इस प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर उपयोग में लाए जाते हैं। इसी प्रकार, 'हिन्दी साहित्य' का अर्थ है– सभी के हित को ध्यान में रखकर हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए लिखी हुई रचना। आज, सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी साहित्य के विकास को विश्व समुदाय के समक्ष रेखांकित किया है, जिससे लोगों में हिन्दी साहित्य के विभिन्न पहलुओं से सम्बंधित पठन–पाठन, चिंतन, समीक्षा इत्यादि के प्रति रूचि बढ़ी है। कुछेक कमी को यदि छोड़ दिया जाए, तो सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी भाषा तथा साहित्य को निरंतर समृद्धि मिली है तथा हिन्दी भाषा ने भी सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी साहित्य को जन–सुलभ बनाने का कार्य किया है।

बीज शब्द (Key Words) : सूचना प्रौद्योगिकी, हिन्दी साहित्य, अंतर्जाल, वेबसाइट, ई–बुक, वेब, डाटा प्रोसेसिंग आदि।

प्रस्तावना –

आधुनिक मानव सभ्यता सूचना क्रांति के युग में प्रवेश कर चुका है। आज, सूचना क्रांति ने मानव जीवन तथा साहित्य के विभिन्न पहलुओं को चमत्कृत किया है। इस सूचना क्रांति ने हिन्दी साहित्य का ज्ञान के प्रति चुनौतियों, प्रचार–प्रसार के अवसरों तथा दूसरे भाषा के साहित्यों से प्रतिस्पर्धा का सृजन किया है। वर्तमान में मोबाईल, लैपटॉप, कम्प्यूटर आदि ने सूचना प्रौद्योगिकी का दायरा बढ़ा दिया है, जिससे साहित्य सर्व–सुलभ हो गई है। कुछ दशक पूर्व साहित्य अध्ययन हेतु परम्परागत तरीके जैसे– पुस्तक, पत्र–पत्रिकाएँ आदि पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन, आज एक बटन दबाते ही सारी सूचनाएँ हमारे सामने प्रतिबिम्बित हो जाती है। हम कुछ क्षण में ही

संपूर्ण पुस्तक या पाठ्य–सामग्री का पी.डी.एफ. प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, स्पष्ट है कि सोशल मीडिया तथा अन्तर्जाल ने पाठ्य–सामग्री को प्राप्त करने तथा प्रसार की प्रक्रिया को और अधिक आसान बना दिया है।

सूचना प्रौद्योगिकी क्या है? –

''सूचना प्रौद्योगिकी आंकड़ों की प्राप्ति, सूचना–संग्रह, सुरक्षा, परिवर्तन, आदान–प्रदान, अध्ययन, डिजाइन आदि कार्यों तथा इन कार्यों के निष्पादन के लिए आवश्यक कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों से संबंधित है।'' जिसमें डेटा की प्रोसेसिंग करके उनकी विवेचना की जाती है, ताकि उसमें निहित सामान्य तथा विशिष्ट अर्थ को समझा जा सके, इसी विवेचित डेटा को 'सूचना' कहा जाता है। आज व्यापार, युद्ध, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान, अंतरिक्ष यान, उपग्रह प्रक्षेपण और छोटे–से–छोटे क्षेत्र से लेकर बड़े–से–बड़े क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी कम्प्यूटर, मोबाईल, वेब तकनीक इत्यादि पर आधारित होता है। इन माध्यमों की सहायता से हम किसी भी सूचना को तत् क्षण प्राप्त कर सकते हैं तथा तुरंत उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं। सूचना आदान–प्रदान की प्रक्रिया में अंतर्जाल, सोशल मीडिया, ई–मेल, यू–ट्यूब, इंस्टैंट मैसेजिंग, ई–बुक, गूगल, वेबसाइट्स, ई–शब्दकोश, एनसाइक्लोपीडिया आदि का प्रयोग तेजी से हो रहा है। चूंकि सूचना प्रौद्योगिकी ने वर्तमान में सूचना प्रक्रिया को जन–सुलभ बना दिया है, इस कारण आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग कहा जाने लगा है।

संक्षेप में, सूचना प्रौद्योगिकी प्रारूपिक रूप में निम्नांकित कार्य करती है–

1. सूचनाओं का संकलन एवं संग्रह
2. सूचनाओं का सम्प्रेषण
3. सूचनाओं का प्रोसेसिंग
4. सूचनाओं का पुनर्रूत्पादन

हिन्दी साहित्य की स्थिति –

भाषा जहाँ भावों और विचारों का संवाहक है, वहीं साहित्य सभी के हित के लिए लिखी हुई रचना है। हिन्दी साहित्य, हिन्दी भाषा से जुड़े लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम करती है। कुछ दशक पूर्व हिन्दी साहित्य से संबंधित पाठ्य–सामग्री हमें आसानी से नहीं मिल पाती थी या उस तक हमारी पहुँच सीमित थी। साहित्य का अध्ययन हम भौतिक रूप में पुस्तक या समाचार पत्रों के माध्यम से ही कर पाते थे। धीरे–धीरे साहित्य संबंधी सामग्री की उपलब्धता विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों की पुस्तकालयों में एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों में होने लगी। इन संस्थाओं में भी उन्हीं लोगों की पहुँच थी, जो इनके सदस्य थे।

धीरे–धीरे समय बदलता गया और संचार क्रांति का युग आ गया। इस युग में हिन्दी भाषा के विकास के साथ–साथ इससे संबंधित साहित्य का विकास भी तेजी से होने लगा। वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी साहित्य के विकसित रूप को जन–जन तक पहुँचाया है।

हिन्दी साहित्य से संबंधित पाठ्य–सामग्री हमें इन्टरनेट वेबसाइट्स जैसे– जागरण, वेब दुनिया, गद्य कोश, हिन्दी नेक्स्ट डॉट कॉम, विकिपीडिया हिन्दी, कविता कोश, भारत कोश आदि के माध्यम से आसानी से उपलब्ध हो जाती है। लोगों की निर्भरता न तो पुस्तकालयों तक सीमित रही और न ही सामग्री से संबंधित पुस्तकों तक। क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में साहित्य से संबंधित लगभग सभी पुस्तकें ई–बुक्स के रूप में इन्टरनेट से प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार, वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य सूचना प्रौद्योगिकी की सीढ़ी पर चढ़ते हुए निरंतर शिखर की ओर अग्रसर है।

सूचना प्रौद्योगिकी का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव –

सूचना प्रौद्योगिकी का हिन्दी साहित्य के विकास में तथा लोगों तक इसकी पहुँच पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ–साथ कुछ हद तक नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है जो कि निम्नलिखित है –

(1) सकारात्मक प्रभाव –

सूचना प्रौद्योगिकी के आ जाने से हिन्दी साहित्य का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। साहित्य से संबंधित अधिकांश सामग्री हमें इन्टरनेट से प्राप्त हो जाती है। आजकल सोशल मीडिया लोगों को एक ऐसा मंच प्रदान कर रही है, जो लोगों को साहित्य लेखन के लिए प्रेरित करती है तथा लेख को आमंत्रित भी करती है। यह एक ऑनलाइन वेब पोर्टल है जो नवोदित रचनाकारों तथा उनके साहित्यिक रचनाओं के लिए पृष्ठभूमि तैयार करती है। हिन्दी के ऑनलाइन वेब पोर्टल में मुख्यतः हिन्दी कुंज, भारतीय पक्ष, समालोचन, इन डॉट कॉम, हिन्दी समय, साहित्य कुंज इत्यादि है, जो निरंतर हिन्दी साहित्य के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। इन वेब पोर्टल में हिन्दी भाषा के अन्तर्गत ई–बुक, व्याकरण, विभिन्न रचनाकारों की कविताएँ, कहानियाँ, नाटक–एकांकी आदि का संकलन किया जाता है। 'भारतकोश' तथा 'विकिपीडिया' नामक मुफ्त एनसाइक्लोपीडिया में साहित्य से संबंधित लगभग सभी तथ्य उपलब्ध है।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक स्वतंत्र विभाग, 'राजभाषा विभाग' का गठन किया गया है। यह विभाग हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ–साथ हिन्दी भाषा के साहित्यों के विकास को भी प्रेरित करता है।आज सोशल मीडिया पर हिन्दी चैनलों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिसमें हिन्दी साहित्य संबंधी विभिन्न तथ्यों को नाट्य रूपान्तरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान में हिन्दी में एक लाख से ज्यादा ब्लॉग सक्रिय होने के साथ–साथ साहित्य संबंधी सैकड़ों पत्र–पत्रिकाएँ आसानी से उपलब्ध है। इस प्रकार, सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी साहित्य तथा जन–सामान्य के बीच की दूरी को समाप्त कर दिया है।

(2) नकारात्मक प्रभाव –

सूचना प्रौद्योगिकी का हिन्दी साहित्य पर कुछ हद तक नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। सोशल मीडिया के कारण लोगों में परस्पर मेल–जोल तथा व्यक्तिगत रूप से मिलने में कमी आयी है। आज भाषा की शुद्धता से ज्यादा अभिव्यक्ति की तीव्रता, सरलता व सहजता को महत्व दिया जाने लगा है। सोशल मीडिया में साहित्यिक या शुद्ध भाषा के स्थान पर खिचड़ी भाषा का प्रयोग बढ़ा है। वर्तमान में हिंगलिश टायपिंग ने देवनागरी लिपि के स्वरूप को बदलकर ही

रख दिया है, जिसने परिनिष्ठित हिन्दी के अस्तित्व को नुकसान पहुँचायी है और लोग सोशल मीडिया की भाषा तथा परिनिष्ठित हिन्दी में भेद करने में अक्षम हो गए हैं।

कुछ दशक पूर्व लोग पुस्तक को अपना सबसे अच्छा मित्र मानते थे, किन्तु सूचना प्रौद्योगिकी तथा सोशल मीडिया के आ जाने से लोग पुस्तक से विमुख होने लगे हैं। अब लोग कम्प्यूटर, मोबाईल, लैपटॉप इत्यादि पर ज्यादा समय व्यतीत कर रहे हैं। चूंकि पुस्तकों के मांग में कमी आई है तथा पाठ्य-सामग्री पी.डी.एफ. रूप में आसानी से उपलब्ध है, इस कारण प्रकाशन उद्योग भी प्रभावित हुआ है।

उपरोक्त दोनों पक्षों का आकलन करने से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से हिन्दी साहित्य में निरंतर विकास हुई है तथा हिन्दी साहित्य ने विश्व-स्तर पर अपनी पहचान स्थापित की है।

हिन्दी साहित्य पर सूचना प्रौद्योगिकी का वैश्विक प्रभाव –

आज सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी भाषा व साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान दिलायी है, जिसके कारण हिन्दी भाषा, विश्व में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली तीसरी सबसे बड़ी भाषा है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज की है। हिन्दी साहित्य हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची सम्प्रेषक, संवाहक और परिचायक भी है। हिन्दी भाषा व साहित्य को विश्व स्तर पर स्थापित करने में 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का भी महत्वपूर्ण योगदान है। इस सम्मेलन में विश्वभर के साहित्यकार, भाषा विज्ञानी, पत्रकार, हिन्दी विद्वान, हिन्दी प्रेमी तथा विषय विशेषज्ञ जुटते हैं। हिन्दी भाषा व साहित्य को वैश्विक पहचान दिलाने हेतु अब तक 11 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' आयोजित हो चुके हैं। इसका आयोजन भारत के साथ-साथ विश्व में मॉरीशस, त्रिनिदाद और टुबैगो, लंदन (यू.के.), न्यूयार्क, दक्षिण अफ्रीका आदि स्थानों पर हो चुका है। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी हिन्दी में भाषण दिया जा चुका है।

वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी तथा सोशल मीडिया के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में बैठा इंसान हिन्दी भाषा व साहित्य का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकता है। विभिन्न साहित्यिक कृतियों को निर्बाध रूप से ग्रहण कर सकता है तथा इच्छानुसार उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकता है। विश्व में किसी भी भाषा को बोलने वाले लोग हिन्दी वर्णमाला, शब्द, व्याकरण, साहित्य आदि से संबंधित तथ्यों का अर्थ अपनी भाषा में प्राप्त कर सकते हैं, जिससे लोगों में हिन्दी भाषा व साहित्य से जुड़ाव लगातार बढ़ा है।

इस प्रकार, सूचना प्रौद्योगिकी की नींव पर हिन्दी साहित्य रूपी इमारत ने अपनी वैश्विक उपस्थिति दर्ज की है। साथ ही साहित्यिक कृतियों के माध्यम से भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति को वैश्विक पहचान मिली है।

निष्कर्ष –

भाषा एवं साहित्य में अटूट संबंध है तथा साहित्य किसी देश की संस्कृति का बोध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी देश के साहित्यिक तथ्यों के प्रचार-प्रसार में सोशल मीडिया तथा सूचना प्रौद्योगिकी का विशिष्ट स्थान है। हिन्दी भाषा के वर्चस्व का आकलन केवल इस बिन्दु पर किया जा सकता है कि इन्टरनेट ब्राउजर्स जैसे- नेटस्केप, मोजिला फायरफॉक्स,

गूगल क्रोम, इन्टरनेट एक्सप्लोरर, ओपेरा, यूसी ब्राउजर, डॉल्फिन ब्राउजर इत्यादि हिन्दी में सर्च करने की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। निश्चय ही सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी साहित्य को विश्व-स्तर पर सक्षम बनाने का कार्य किया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी व सोशल मीडिया हिन्दी साहित्य को भारतवर्ष के साथ-साथ वैश्विक जन-समुदाय तक पहुँचाने में माध्यम के रूप में उभरा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. http://hindi.m.wikipedia.org/wiki/lwpuk&izkS|ksfxdh
2. वशिष्ठ, के.सी., शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता, उपकार प्रकाशन आगरा पृष्ठ संख्या 176-177.
3. www.hindikunj.com>20198/08
4. जिन्दल, सुरेश कुमार, आज की हिन्दी, पृष्ठ संख्या-26.
5. गोस्वामी, कृष्ण कुमार, आधुनिक हिन्दी : विविध आयाम, कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 693-718.
6. मल्होत्रा, विजय कुमार, कंप्यूटर और भाषिक अनुप्रयोग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
7. 'आजकल' पत्रिका, अंक-सितम्बर-2013.
8. जिंदल, सुरेश कुमार, सूचना प्रौद्योगिकी : कल, आज और कल, DRDO, रक्षा मंत्रालय, दिल्ली, पृष्ठ संख्या-8-30.